वर्तमान परिस्थितियों में भारत में इतिहास-शिक्षण के उद्देश्य
(AIMS OF TEACHING HISTORY IN PRESENT CONDITIONS OF INDIA)

स्वतन्त्रता-प्राप्ति के बाद भारत ने राष्ट्रीय विकास के लिए धर्म-निरपेक्षता, लोकतन्त्र, समाजवाद तथा शान्ति को निर्देशक सिद्धान्तों (Guiding Principles) के रूप में ग्रहण किया है। इतिहास का अध्ययन करते समय इन सिद्धान्तों को ध्यान में रखा जाना परमावश्यक है। परन्तु वास्तविकता कुछ और है। आजकल इतिहास के अध्यापन और उसकी पाठ्य-पुस्तकों के निर्माण में इन स्वीकृत सिद्धान्तों का किसी भी प्रकार से प्रयोग नहीं किया जा रहा है। इस समय इतिहास के अध्यापन में राजनैतिक इतिहास, युद्धों, संधियों तथा ऐतिहासिक चरित्रों के वर्णन पर अधिक बल दिया जाता है, जबकि आवश्यकता इस बात की है कि इसके अध्यापन द्वारा सामाजिक विकास की समझदारी पर बल दिया जाए, क्योंकि इसके माध्यम से छात्रों में इतिहास के लिए रुचि उत्पन्न की जा सकती है। साथ ही उनके दृष्टिकोण को व्यापक एवं उदार बनाया जा सकता है। आज साम्प्रदायिकता, क्षेत्रीयता तथा धार्मिक कट्टरता एवं धर्मान्धता ने इतिहास के अध्यापन को प्रभावित करके राष्ट्रीय इतिहास के वास्तविक चित्र को धूमिल बना दिया है। साथ ही इन्होंने संकीर्ण भावनाओं को विकसित करने में सहयोग दिया है।

हमारा समाज सांस्कृतिक रूप से बहुआयामी है, इसलिए शिक्षा द्वारा उन सार्वजनीन और शाश्वत मूल्यों का विकास होना चाहिए जो लोगों को राष्ट्रीय एकता की ओर ले जा सकें। इसके लिए शिक्षा-क्रम या पाठ्यक्रम (Curriculum) में भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन का इतिहास, संवैधानिक जिम्मेदारियाँ तथा राष्ट्रीय अस्मिता से सम्बन्धित अनिवार्य तत्त्व शामिल किये जायें।

भारत ने विभिन्न देशों में शान्ति और आपसी भाईचारे के लिए सदैव प्रयास किया है और 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के आदर्शों को सँजोया है। इस परम्परा के अनुसार शिक्षा-व्यवस्था का प्रयास यह होना चाहिए कि नई पीढ़ी में विश्वव्यापी दृष्टिकोण सुदृढ़ हो तथा अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग और शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व की भावना बढ़े।

Scanned with CamScanner

उक्त परिस्थितियों को ध्यान में रखकर इतिहास-शिक्षण के निम्नलिखित प्राप्य उद्देश्यों (Objectives) पर बल दिया जा सकता है—

(1) छात्रों को यह अनुभूति करायी जाय कि इतिहास सामाजिक परिवर्तन तथा विकास की प्रक्रिया का अध्ययन है।

(2) छात्रों को आधुनिक समाज, जिसमें वे रह रहे हैं, का ज्ञान प्रदान किया जाय।

(3) छात्रों को देश की राजनैतिक, सामाजिक एवं आर्थिक निर्बलताओं से अवगत कराया जाय। साथ ही उन्हें दूर करने के लिए प्रोत्साहित किया जाय।

(4) छात्रों में सत्य देश-प्रेम की भावना का विकास किया जाय। इसके लिए उन्हें राष्ट्रीय विरासत (National Heritage) की समझदारी प्रदान की जानी चाहिए। उनको यह बताया जाय कि इस विरासत का विकास किस प्रकार हुआ है। हमने विभिन्न जातियों, धर्मों तथा संस्कृतियों को अपनी विरासत में किस प्रकार मिलाया ?

(5) छात्रों को राष्ट्रीय विरासत के साथ-साथ माननीय विरासत से भी अवगत कराया जाय जिससे उनमें अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना का विकास किया जा सके।

(6) छात्रों को भारतीय संस्कृति की विविधता एवं एकता से अवगत कराया जाय।

(7) छात्रों में आलोचनात्मक चिन्तन का विकास किया जाय।

शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर इतिहास-शिक्षण के उद्देश्य
(AIMS OF TEACHING HISTORY AT THE DIFFERENT STAGES OF EDUCATION)

1. प्राइमरी स्तर पर उद्देश्य (Aims at Primary Stage)—इस स्तर पर इतिहास-शिक्षक को निम्नलिखित उद्देश्यों को ध्यान में रखकर विषय का प्रतिपादन करना चाहिए—

(अ) इतिहास के प्रति छात्रों की रुचि जाग्रत करना। रुचि को जाग्रत करने के लिए अधिक सूचनाएँ प्रदान न की जायें और न इसके मस्तिष्क पर परीक्षा का निरर्थक भार डाला जाय।

(ब) ऐतिहासिक कल्पना जाग्रत करना। इसके लिए इतिहास-शिक्षक को कहानियों द्वारा शिक्षण प्रदान करना चाहिए, क्योंकि इस स्तर पर बालक कहानीप्रिय होता है।

(स) छात्रों को इस बात से परिचित कराना कि हमारे प्रतिदिन के जीवन पर अतीत का प्रभाव होता है।

(द) छात्रों में समय-ज्ञान को धीरे-धीरे विकसित करना। इसके लिए इतिहास-शिक्षक स्थूल वस्तुओं का उपयोग करें; उदाहरणार्थ—समय-चार्ट, समय-रेखा आदि।

(य) छात्रों में देश-प्रेम तथा विश्व-बन्धुत्व की भावना का विकास करना। इस स्तर पर विश्व-इतिहास से भी कहानियाँ ली जायँ। उनके शिक्षण से उनमें विश्व-बन्धुत्व के अंकुर उत्पन्न किये जा सकते हैं।

2. जूनियर स्तर पर उद्देश्य (Aims at Junior Stage)—इस स्तर पर इतिहास-शिक्षक को निम्नलिखित उद्देश्यों को ध्यान में रखना चाहिए, यथा—

(अ) इस स्तर पर छात्रों में इतिहास के लिए वास्तविक प्रेम उत्पन्न करना चाहिए। इसके लिए राजनैतिक इतिहास के स्थान पर सामाजिक इतिहास के अध्ययन पर बल दिया जाय।

(ब) छात्रों को शुद्ध रूप से विचार करने के लिए तत्पर बनाना चाहिए। इसके अतिरिक्त उनकी अन्य मानसिक शक्तियों को विकसित करना चाहिए।

(स) उनको ऐतिहासिक तथ्यों एवं कार्यों की आलोचना करने के लिए प्रोत्साहित किया जाय।

(द) इस स्तर पर छात्रों को अतीत के प्रकाश में अधिक से अधिक वर्तमान को समझने के योग्य बनाना। इसके अतिरिक्त उन्हें भविष्य के विषय में भी सोचने के लिए प्रोत्साहित किया जाय।

(य) छात्रों में समय-ज्ञान को विकसित करने के लिए अमूर्त साधनों का भी उपयोग करना चाहिए।

(र) छात्रों में सत्य देश-प्रेम तथा विश्व-बन्धुत्व की भावना का विकसित किया जाय।

(ल) मानचित्र पर घटनाओं सम्बन्धी स्थलों तथा राज्य-सीमा का ज्ञान कराकर भौगोलिक स्थिति से परिचित कराना। इसके लिए इतिहास-शिक्षक को इतिहास का भूगोल से सम्बन्ध स्थापित करके शिक्षण प्रदान करना चाहिए।

3. हायर सेकेण्डरी स्तर पर उद्देश्य (Aims at Higher Secondary)—इस स्तर पर इतिहास-शिक्षण को निम्नलिखित उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए छात्रों को तत्पर बनाना चाहिए—

(अ) इस स्तर पर छात्रों में इतिहास के लिए वास्तविक रुचि को दृढ़ बनाना।

(ब) छात्रों को मानसिक प्रशिक्षण प्रदान करना, अर्थात् उनकी मानसिक शक्तियों को एक मुख्य प्रकार से प्रशिक्षित करना, जिससे उनकी तर्क एवं निर्णय-शक्तियों का पर्याप्त विकास हो सके जिससे वे प्रत्येक तथ्य को तर्क तथा प्रमाणों के आधार पर ही स्वीकार करना सीख जायें।

(स) राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय संस्कृतियों का ज्ञान प्रदान करना जिससे वे अपने देश की विश्व-संस्कृति के लिए प्रदान की गई देनों को समझ सकें।

Scanned with CamScanner

(द) अतीत के आधार पर वर्तमान को समझने की क्षमता उत्पन्न करना तथा उसके भविष्य के आकलन के लिए सामर्थ्य उत्पन्न करना।

(य) विकास के सिद्धान्त से अवगत कराना।

(र) समय-ज्ञान के विकास को दृढ़ बनाना।

(ल) छात्रों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करना।

(व) राष्ट्र की सामाजिक, राजनैतिक तथा धार्मिक समस्याओं से अवगत कराकर उनको स्वयं समस्या हल करने के योग्य बनाना।

(श) मानव सभ्यता के विकास की विशेषताओं से अवगत कराना।

इतिहास-शिक्षण के प्राप्य उद्देश्य
(OBJECTIVES OF HISTORY TEACHING)

इतिहास-शिक्षण के प्राप्य उद्देश्यों को जानने से पूर्व उद्देश्य तथा प्राप्य-उद्देश्यों का अर्थ एवं अन्तर देखना अनिवार्य है। प्रायः उद्देश्य और प्राप्य-उद्देश्य दोनों का एक ही अर्थ लगाया जाता है, परन्तु ऐसा नहीं है। इनके वास्तविक अर्थ को स्पष्ट करने के लिए पृथक्-पृथक् परिभाषाएँ तथा उनके अन्तर को नीचे दिया जा रहा है—

लक्ष्य या उद्देश्य का अर्थ (Meaning of Aim)—इसके अर्थ को स्पष्ट करते हुए कार्टर वी. गुड ने लिखा है, **"उद्देश्य पूर्व-निर्धारित साध्य होता है जो किसी कार्य या क्रिया का मार्ग-दर्शन करता है।"**

"Aim is a foreseen end that gives direction to an activity."
—Carter, V. Good

उद्देश्य में दूरदर्शिता होती है, साथ ही उसमें आदर्शवादिता होती है।

प्राप्य उद्देश्य का अर्थ (Meaning of Objective)—जब हम किसी उद्देश्य की प्राप्ति के लिए कार्य करते हैं तो उसके लिए हमें जिन छोटी-छोटी बातों को ध्यान में रखना पड़ता है, उन्हें उस उद्देश्य के प्राप्य उद्देश्य कहते हैं। प्राप्य उद्देश्य के अर्थ को स्पष्ट करते हुए कार्टर वी. गुड ने लिखा है, **"प्राप्य उद्देश्य वह मानदण्ड या लक्ष्य है जिसको छात्र द्वारा विद्यालय क्रिया को पूर्ण करके प्राप्त किया जाता है।"**

"Objective is a standard or goal to be achieved by the pupil when the work in the school activity is completed." **—Carter, V. Good**

इसके अर्थ को अधिक स्पष्ट करते हुए गुड ने आगे लिखा है, **"प्राप्य उद्देश्य छात्र के व्यवहार में वह इच्छित परिवर्तन है जो विद्यालय द्वारा पथ-प्रदर्शित अनुभव का परिणाम होता है।"**

"Objective is a desired change in the behaviour of pupil as a result of experience directed by school." **—Carter, V. Good**

इस प्रकार प्राप्य उद्देश्य में व्यावहारिकता अधिक होती है। दूसरे, इसको प्राप्त कराने का दायित्व शिक्षक के कन्धों पर होता है।

Scanned with CamScanner

उद्देश्य तथा प्राप्य उद्देश्य में अन्तर (Difference between Aim and Objective)—इन दोनों के अन्तर को निम्नांकित तालिका द्वारा स्पष्ट किया जा रहा है—

उद्देश्य/लक्ष्य	प्राप्य उद्देश्य
1. उद्देश्य का क्षेत्र व्यापक होता है।	1. प्राप्य उद्देश्य का क्षेत्र सीमित होता है।
2. उद्देश्य एक सामान्य कथन है।	2. प्राप्य उद्देश्य एक निश्चित कथन है।
3. उद्देश्य की प्राप्ति के लिए सम्पूर्ण विद्यालय-कार्यक्रम, समाज तथा राष्ट्र उत्तरदायी होता है।	3. प्राप्य उद्देश्य लक्ष्य या उद्देश्य की छोटी-छोटी शाखाएँ होती हैं। अतः इनकी प्राप्ति का दायित्व शिक्षक तथा पाठ विशेष की विषय-वस्तु पर होता है।
4. उद्देश्य में आदर्शवादिता होती है। अतः उसे पूर्ण रूप में प्राप्त करना सम्भव नहीं है। इसकी प्राप्ति भी हो सकती है और नहीं भी हो सकती है।	4. प्राप्य उद्देश्यों की प्राप्ति सम्भव है, क्योंकि इनमें व्यावहारिकता होती है। दूसरे शब्दों में प्राप्य उद्देश्य प्राप्यनीय हैं।
5. यह अनिर्दिष्ट (Vague) होता है।	5. यह विशिष्ट (Specific) होता है।
6. यह कक्षा-कक्ष की शिक्षण-रणनीति (Teaching strategy) का निर्धारण करने में सहायक नहीं है।	6. यह कक्षा-कक्ष की शिक्षा रणनीति को निर्णित करने में सहायता प्रदान करता है।
7. यह सीखने वालों (Learners) को स्पष्ट शिक्षा-निर्देश प्रदान नहीं करता है।	7. यह सीखने वालों या छात्रों को निश्चित एवं स्पष्ट निर्देश प्रदान करता है।